अंक विशेष

ज्योतिष और आयुर्वेद

169 वाँ अंक

विक्रम संवत् 2070, शक संवत् 1935

ISO 9001:2008

ज्योतिष मंथन

वर्ष-15 अंक-1 जून-2013

भारतीय प्राच्य विद्याओं की मासिक पत्रिका

आध्यात्म और आयुर्वेद

पूजा और आयुर्वेद

रुद्राक्ष चिकित्सा

गर्भ में गुण-दोष

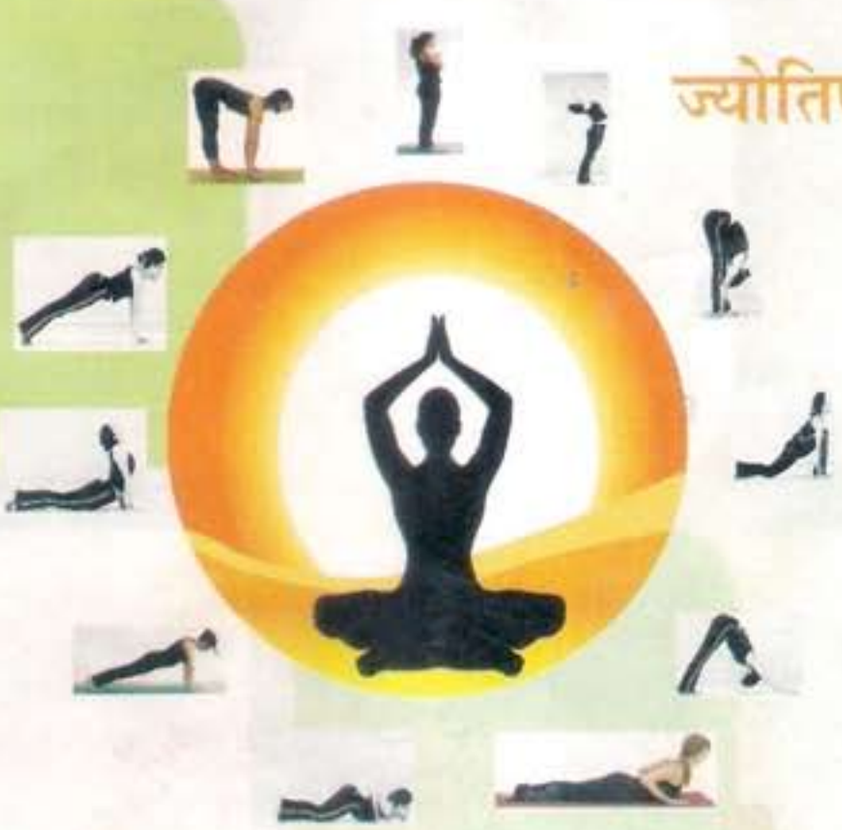

ज्योतिष-आयुर्वेद : पूरक विज्ञान

मिट्टी चिकित्सा

शरीर में हैं ग्रह

तंत्र प्रयोग

मूल्यः 35/-

तंत्र प्रयोग - वर्तमान उपयोगिता

आचार्य के. विमलेन्दु

तंत्र शास्त्र में इस बात का उल्लेख आया है कि इस युग में तंत्र साधना ही प्रभावशाली और सिद्धिदायक हो सकती है। प्रपंचसार का मत है कि कृत युग में '**श्रुति**' के अनुसार, त्रेता में '**स्मृति**' के अनुसार द्वापर में '**पुराण**' के अनुसार और कलियुग में '**आगम**' के अनुसार धर्म की सार्थकता होती है। यथा - **श्रुत्युक्तस्तु कृते धर्म स्त्रेतायां स्मृति सम्भवः। द्वापरे तु पुराणोक्तः कलावागम सम्भवः।।**

- प्रपंचसार (आगम रहस्यम्)

'**महानिर्वाण तंत्र**' के द्वितीय उल्लास में कहा गया है -

सत्वं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं मयोच्यते।
विनाह्यगम मार्गेण कलौ नास्ति गतिप्रिये।।
श्रुति स्मृति पुराणादौ मर्यवोक्त पुरा शिवे।
आगमोक्तविधानेन कलौ देवान्यजेत्सुधीः।।
कलावागममुल्लङ्घ्य योऽन्य मार्गे प्रवर्तते।
न तस्य गतिरस्तीति सत्यं सत्यं न सन्शयः।।

अर्थात् शिवजी कह रहे हैं कि मैंने पहले श्रुति (वेद), स्मृति और पुराण इत्यादि में बतलाया है कि कलियुग में '**आगम**' विधान से ही सुधिजन देवताओं की उपासना करें। इस युग में जो व्यक्ति '**आगम**' मार्ग छोड़कर अन्य मार्ग में साधना करता है, उसकी गति कभी भी संभव नहीं है, यह सर्वथा सत्य है और इसमें कोई संदेह नहीं है।

जिस विद्या में सृष्टि, प्रलय, कल्प, मंत्र-निर्णय, देव संस्थान, तीर्थ, आश्रम धर्म, विप्र संस्थान, यंत्र, देवोत्पत्ति, व्रत, राज धर्म, दान धर्म, युग धर्म, ज्योतिष, पुराण, आध्यात्म एवं व्यावहारिक विषयों का वर्णन हो, उसे '**तंत्र शास्त्र**' कहा जाता है।

हिंदू धर्म में तंत्र शास्त्र को प्रधानता दी गई है और तांत्रिक अनुष्ठानों को शीघ्र फलदायक माना जाता है। तंत्र शास्त्र की उत्पत्ति सामवेद तथा अथर्ववेद से मानी जाती है। भगवान शिव इस विद्या के आदि जनक हैं। हिंदुओं के तंत्र ग्रंथ तीन भागों में विभाजित हैं - शैव, शाक्त और वैष्णव। जो तांत्रिक जिस संप्रदाय का अनुयायी होता है वह उसी संप्रदाय के ग्रंथों के आधार पर अपनी साधना करता है।

तंत्र साधना में तत्व को विशेष महत्व दिया गया है। हमारा शरीर पंचतत्वों से बना हुआ है। यथा - अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल और आकाश। इन तत्वों का हमारे शरीर में समुचित मात्रा में होना शरीर को शक्ति प्रदान करता है। इसे तांत्रिक विधि से पोषित किया जाता है जिससे हमारे भौतिक, स्थूल और कारण शरीर को आध्यात्म में आगे बढ़ने में सहयोग मिलता है।

कार्य विशेष के अनुसार साधना का वर्णन हमारे तंत्र शास्त्र में आया है। शास्त्रों में उधृत है - '**ध्यानं विना भवेत्मूकः**' अर्थात् ध्यान के बिना साधक मूक है। ये ध्यान तीन प्रकार हैं - (1) सात्विक, (2.) राजस और (3.) तामस। '**शारदा तिलक**' और '**मेरूतंत्र**' आदि तंत्र ग्रंथों में तीनों ध्यान भिन्न-भिन्न प्रकार से वर्णित हैं। मंत्र एक होने पर भी रूप उपासना भेद से फल भिन्न-भिन्न होता है। जैसा कि कहा गया है कि - '**यथा कामं तथा ध्यानं कारयेत् साधकोत्तमः**' अर्थात् जैसा कार्य हो साधक उसी प्रकार का ध्यान करें। फल विशेष की प्राप्ति के लिए बतलाया गया है।

सात्विकं ध्यानमाख्यातममृत्युनिवारणम्।
आयुरारोग्य - जननमपवर्ग - फल - प्रदम्।।
राजसं ध्यानमाख्यातम् धर्मकामार्थ-सिद्धिदम्।
तामसं शत्रुशमनं कृत्याभूत-ग्राहस्यदम्।।

अर्थात् '**सात्विक ध्यान**' अपमृत्यु का निवारक, आयु आरोग्य का कारक तथा मोक्ष फल का देने वाला है। '**राजस ध्यान**' धर्म, अर्थ, काम की सिद्धि देने वाला है। '**तामस ध्यान**' द्वारा कृत्या, भूत और ग्रहादि के द्वारा शत्रु का शमन होता है अतः कार्य के अनुसार ध्यान का प्रयोग किया जाता है।

तंत्र शास्त्र में कहा गया है कि -

कवचं देवतागात्रं पटलं देवता शिरः।
पद्धतिर्देवहस्तौ तु मुखं साहस्त्रकं स्मृतम्।
स्तोत्राणि देवतापादौ पंचांग पंचभिः स्मृतम्।।

अर्थात् कवच देवता का शरीर है, पटल देवता का सिर है, पद्धति देवता के हाथ हैं, सहस्रनाम मुख है और स्रोत देवता के पाद हैं। इन पांच अंगों के साथ ही जप, होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन से मिलकर दशाङ्ग पूर्ण होते हैं। इस प्रकार सविधि आराध्य देव और देवी की पूजा करने पर

देवता पूर्ण फलदायी होंगे और त्वरित प्रसन्न होंगे। इससे साधक का हर प्रकार से कल्याण होगा। ज्योतिष द्वारा काल के विषय में विचार किया जाता है। रुद्रयामल तंत्र में साधना के लिए ज्योतिष का भी सहयोग पूर्ण रूप से लिया गया है।

ज्योतिष के अनुसार '**यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे**' यानि जो इस धरती पर किसी भी पिंड या शरीर में प्रभाव है, उस प्रभाव को आकाश में उपस्थित ग्रह, नक्षत्र और राशि के द्वारा विचार किया जाता है।

तांत्रिक मतानुसार व्यक्ति के आत्म साक्षात्कार में सूर्य, चंद्र और अग्नि का समीकरण सहयोगी होता है। मनुष्य के मेरुदण्ड में विद्यमान इडा, पिंगला और सुषुम्ना - सूर्य, चंद्र और अग्नि के प्रतीक हैं। मनुष्य का शरीर अपने आप में ब्रह्माण्ड है। इन बातों को स्वीकार करते हुए हमारे आगम तंत्र और रुद्रयामल तंत्र भी यह मानते हैं कि ज्योतिष शास्त्र का प्रयोग धर्मशास्त्र के लिए अति उपयोगी है। इसके सूक्ष्म प्रयोग को लेकर ही इष्ट देव की आराधना में न्यास विधि में गणेश, ग्रह, नक्षत्र, योगिनी, राशि आदि मानकर पूजन में इनकी स्तुति की जाती है।

शुभ समय में किया गया कार्य उत्तम फलदायी होता है, इसको मानते हुए रुद्रयामल तंत्र में ज्योतिष का सहयोग लेकर प्रत्येक देवता के लिए विशिष्ट दीक्षा कब ली जाए, इसके लिए कौन सा शुभ समय होगा, ज्ञात किया जाता है। उपासना आरंभ करने और उसी सिद्धि के लिए पर्व दिवसों का ज्योतिष के आधार पर चयन किया जाता है और उन दिनों को भी विशिष्ट मुहूर्त्तों का उपयोग किया जाता है। इसके लिए पंचांग के पांचों अंगों में शुद्धि का विचार किया जाता है। तांत्रिक पंचांग में संकल्प लेने के लिए देवताओं के, नित्याओं के, वर्ण मातृकाओं के और ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार आदि के नाम का निर्देश एवं उनके गणना विधि के प्रयोग पर बल दिया गया है। कई प्रकार के पूजन के संकल्प और न्यास में भी इनका उपयोग होता है।

रुद्रयामल तंत्र के अनुसार धर्मशास्त्र और ज्योतिष के साहचर्य से कर्म करने पर ही साधना में पूर्णता आती है और इस प्रकार से साधना करने पर सिद्धि मिलती है।

इसका उदाहरण नवरात्रि के पूजन में खासतौर पर मिलता है। जिस प्रकार कालचक्र के विभाग करने पर एक दिन-रात में चार संधिकाल होते हैं, उसी प्रकार देवताओं के एक वर्षीय दिन-रात में चार संधिकाल होते हैं। एक वर्ष में दो अंयन परिवर्तन, उत्तरायण और दक्षिणायन, छः छः मास के होते हैं। उसी प्रकार दो गोल परिवर्तन भी एक वर्ष में होता है। इन संधिकालों में नवरात्रि पर्व का विशेष पूजन किया जाता है। वर्ष के संधिकाल के मास और नवरात्रि पूजन इस प्रकार समझे जा सकते हैं -

1. **प्रातःकाल (गोल संधि)**- चैत्री नवरात्र।
2. **मध्याह्न काल (अयन संधि)** - आषाढ़ी नवरात्र।
3. **संध्या काल (गोल संधि)**-अश्विन नवरात्र।
4. **मध्य रात्रि (अयन संधि)**-माघी नवरात्र।

भारतीय उपासना पद्धति में संधिकालों को विशेष महत्व दिया गया है क्योंकि इन कालों में नक्षत्रों के गुण धर्म, प्रकृति के सूक्ष्म तत्व और ग्रह पिंडों की रश्मियों के तत्व, उनका प्रत्यावर्त्तन तथा संक्रमण पृथ्वी के समस्त प्राणियों को प्रभावित करते हैं अतः भारतीय साधना में साधक को अपनी संध्या पूजन करने के विशेष महत्व को हमारे ऋषिगण बहुत पहले से ही बतलाते आए हैं और इनका उपयोग अपनी साधना में करते रहे हैं।

संधिकाल के पूजन को संध्या उपासना भी कहा जाता है। हमारी साधना त्रिगुणात्मक शक्ति वाली कही गई है - सृष्टि, स्थिति और संहार। इसके लिए त्रि-संध्या पूजन विशेष महत्व के होते हैं अतः वर्तमान परिवेश में तंत्र साधना हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है। इसे दूसरे प्रकार के देखें तो हिंदू मान्यता के अनुसार संपूर्ण चराचर सृष्टि को उत्पन्न करने वाली अव्यक्त एवं अलौकिक-शक्ति का नाम '**पर-ब्रह्म**' है। '**पर-ब्रह्म**' ही ईश्वर है।

सृष्टि कार्य हेतु ब्रह्मा की इच्छा हुई '**एकोहं बहुश्याम**' यानि एक से अनेक हो जाऊँ और उन्होंने **ब्रह्म और प्रकृति** की रचना की। इस प्रकार धरती पर **पुरुष (ब्रह्म)** और **नारी (शक्ति/प्रकृति)** की रचना हुई अतः साधना द्वारा सभी व्यक्ति उस '**पर-ब्रह्म**' में समाहित होना चाहता है और जीवन चक्र से मुक्ति की कामना करता है। यह तंत्र साधना के द्वारा ही संभव है। ○○○

17, सरदार पटेल पथ,
उत्तरी श्रीकृष्णापुरी, पटना-13

कुछ घरेलू उपाय

- चेहरे के काले दागों को मिटाने के लिए टमाटर के रस में रूई भिगोकर दागों पर मलें। काले धब्बे साफ हो जाएंगे।
- रोजाना सुबह एक गिलास टमाटर के रस में नमक, जीरा, कालीमिर्च को मिलाकर पीएं। चेहरे पर नारियल पानी लगाएं।
- आलू उबालकर छिलके छील लें और इसके छिलकों को चेहरे पर रगडें, मुहांसे ठीक हो जाएंगे।